TEACHERS OF BIHAR

Reg. No. BR/2025/0487469

पद्मपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

मई 2026 | अंक 21

ममता की छाया

ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

माँ जीवन की वह शक्ति हैं, जो अपने प्रेम, त्याग और संस्कारों से परिवार और समाज की नींव को मजबूत बनाती हैं। एक बच्चे के जीवन में माँ ही उसकी पहली शिक्षिका होती हैं, जो उसे बोलना, समझना और सही रास्ते पर चलना सिखाती हैं।

माँ का स्नेह, धैर्य और समर्पण हर परिस्थिति में प्रेरणा देता है। उनके योगदान को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। समाज और राष्ट्र निर्माण में माताओं की भूमिका सदैव अमूल्य रही है।

मुखपृष्ठ चित्र

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय, साहू टोला, बांध के निकट
जमुनिया, चकिया, पूर्वी चंपारण

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संपादक

राम किशोर पाठक
प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कालीगंज उत्तर टोला, बिहटा

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय
नारायणपुर, बिक्रम, पटना

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से नि:शुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संरक्षक का संदेश

‘पद्यपंकज’ केवल एक मासिक ई-मैगज़ीन नहीं, बल्कि शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का एक सशक्त एवं प्रेरणादायी मंच है।
टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित यह सुंदर प्रयास शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा साहित्यप्रेमियों की प्रतिभाओं को नई उड़ान देने का कार्य कर रहा है।

आज के डिजिटल युग में जहाँ सकारात्मक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है, वहाँ ‘पद्यपंकज’ अपनी उत्कृष्ट रचनाओं, विचारों, कविताओं, लेखों एवं शैक्षणिक सामग्री के माध्यम से समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। यह मंच न केवल रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, बल्कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच साहित्यिक एवं बौद्धिक चेतना को भी सशक्त बनाता है।
हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि ‘पद्यपंकज’ निरंतर सफलता की नई ऊँचाइयों को स्पर्श करे, शिक्षा एवं साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखे तथा आने वाले समय में और अधिक लोगों को प्रेरित करता रहे।

सम्पूर्ण संपादकीय टीम, सभी रचनाकारों एवं सहयोगियों को इस सराहनीय पहल के लिए हृदय से बधाई एवं अनंत मंगलकामनाएँ।

चंदन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा

पूर्व संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश

"पद्यपंकज" जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं "पद्यपंकज" पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,

विद्यालयी शिक्षा विभाग

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय

माँ ममता की खान है, माँ ही है सर्वस्व।
सदा भला सुत चाहती, तजकर जीवन तत्त्व।।

माँ के चरणों में मिले, सदा सुखद विश्राम।
माँ की सेवा जो करे, वह पाए हरि धाम।।

मित्रों, मासिक पत्रिका पद्यपंकज का मई अंक माँ के श्री चरणों में समर्पित करते हुए आपके समक्ष प्रस्तुत है। जैसा कि हम सभी जानते है कि मई माह में पूरा विश्व मातृ दिवस मना रहा था, वैसे में हमारे कलमकार शिक्षक बंधुओं की भाव सरिता में भी अनेक कविता पुष्प खिले; जिन्हें पिरोकर एक हार के रूप में आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि हमें आपका भरपूर प्यार और सहयोग मिलेगा।

मित्रों, माँ ही सर्वस्व है। माँ के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है तथापि हम माँ के लिए एक दिवस मना रहे हैं, यह अपने-आप में चिंतन का विषय है। मगर वर्तमान समय में बढ़ते वृद्धाश्रमों की संख्या और वहाँ पर बढ़ती हमारी माताओं की संख्या चिंता का विषय है। हमें सोचने पर विवश करती है कि क्या किसी दिवस विशेष को हम सिर्फ सांकेतिक रूप से तो नहीं मना रहे हैं? हमारी भावनाए सुषुप्त तो नहीं हो रही है? हम चेतना मरती तो नहीं जा रही है?

माँ के प्रति विविध भाव एवं समस्याओं को लेकर काव्य के रूप में शिक्षकों ने अपने विचार देकर समाज को नई दिशा दिखाने का प्रयास किया है, जिसका समेकित रूप इस पत्रिका में आपके सामने प्रस्तुत है। आप सुधि पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत अवश्य कराएँ। सादर

माँ के ही आशीष से, बनता पुत्र महान।
दशरथ नंदन बन गए, ज्यों सबके भगवान।।

आशीर्वचनों को सदा, माँ की रखो सहेज।
करिज पूजा वंदना, जिससे बढ़ता तेज।।

राम किशोर पाठक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय, पालीगंज,
बिहटा, पटना

संपादकीय

प्रिय साथियों,

कैसे है आप सभी। उम्मीद है आपकी गर्मी की छुट्टियाँ बहुत अच्छे से बीत रही होगी। मई माह के इस विशेष अंक में हमने मातृ दिवस को महत्व दिया है।

माँ, नाम से ही इतनी ममता झलकती है कि लिखने के भाव पन्ने पर उतर नहीं सकते। एक ऐसी शख़्सियत जिनकी पूरी जिंदगी केवल उनके बच्चे के लिए ही होती है। माँ के आँचल में इतना सुकून है कि सारे सुख-सुविधा उसके सामने कुछ नहीं है। एक माँ, सिर्फ़ अपने घर में ही नहीं, बल्कि हर जगह अपनी ममता का अहसास दिलाती है। विद्यालय में बच्चे के साथ एक शिक्षिका बाद में मिलती है, पहले उसे एक माँ ही मिलती है।

वैसे तो माँ के बारे में लिखना आसान नहीं है लेकिन ममता की छाया विशेष इस काव्य संग्रह में आप सभी को माँ के जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखने को मिलेगा। हमारे सभी रचनाकारों ने एक से बढ़कर एक रचना को आपके सामने प्रस्तुत किया है।

आज हम सब गर्मी की छुट्टियाँ बड़े मजे से बिता रहे हैं, लेकिन एक माँ के लिए कभी छुट्टी नहीं होती। वो हमेशा अपने काम में लगी रहती है। माँ शब्द को समझना सबके बस के बात नहीं, यह सिर्फ़ एक शब्द नहीं बल्कि पूरी दुनिया है। अगर आप समझ गए इसका मतलब आपने अपने जिंदगी के बड़े बड़े पड़ाव पार कर लिए हैं और आपने समझ लिया है कि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी समस्या में हमें सिर्फ माँ की ही याद आती है।

आप सभी को पद्यपंकज की पूरी टीम की ओर से मातृ दिवस की विशेष बधाई और शुभकामनाएँ। साथ ही हमारे सारे रचनाकारों को विशेष धन्यवाद जिन्होंने अपने शब्दों को इस अंक में सजाया।

अनुपमा प्रियदर्शिनी
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,
ररघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

क्र 0 सं0	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं0
1	मेरी माँ को	नीतू रानी	10
2	MOTHER	Ashish K Pathak	11
3	माँ	रामपाल प्रसाद सिंह 'अनजान'	12
4	माँ	ब्यूटी कुमारी	13
5	माँ की ममता	राम किशोर पाठक	14
6	माँ	बिंदु अग्रवाल	15
7	माँ	रुचिका	16
8	मेरी मां	आशीष अम्बर	17
9	माँ	भवानंद सिंह	18
10	मां की याद सताती है	मनु कुमारी	19
11	मां की ममता	हर्ष नारायण दास	21
12	माँ	मुन्नी कुमारी	22

मेरी माँ को

मेरी प्यारी माँ को ,
सुर्ख लाल रंग पसंद था।
लाल सिंदूर लाल बिंदी,
लाल साड़ी माँ को पसंद था।
लाल चूड़ी लाल कंगन ,
लाल माला माँ को पसंद था।
लाल पैर रंगा, लाल नेलपॉलिस,
लाल रबड़ माँ को पसंद था।
मेरी प्यारी माँ को,
सुर्ख लाल रंग पसंद था।
लाल चद्दर लाल तकिया,
लाल मच्छरदानी मां को पसंद था।
लाल स्वेटर लाल मफलर,
लाल पैंताबा माँ को पसंद था।
पापा का कमाया लाल -लाल रुपये,
बेफालतू ख़र्च करना माँ को नही पसंद था।
माँ के हाथों का कम तेल का बना खाना,
मेरे परिवार में सबको पसंद था।
मेरी प्यारी माँ को,
सुर्ख लाल रंग पसंद था।

नीतू रानी,
स्कूल -म०वि० रहमत
नगर सदर मुख्यालय
पूर्णियाँ बिहार।

MOTHER

She is the Soil
from where my roots came
She is the silent
of whatever am I.
Her love breathes
in my every pulse and bone
Even my first heartbeat
was borrowed from her own.
In her rowing eyes
I am always enough
In her heart
I am always home.
She lifts me
whenever I fall
She cheers me
whenever I rise.
Her loves so unbound
because of her
We live life
So beautiful and profound.

Ashish K Pathak
Middle school Sarha
Dharhara Munger

माँ

जन्म देकर कह रही माँ,पूज लो भगवान को।
लग गया आघात पल में,आज तो “अनजान”को।।
कर लिया ऐसा अगर मैं,छोड़कर पल्लू जरा।
फिर कहूँगा मैं पलट कर,दिल नहीं मेरा भरा।।

ग्रंथ जग के कह रहे जब,स्वर्ग तुमसे मौन है।
सृष्टि माँ तुझमें समाई,जग विधाता कौन है।।
सृष्टि को जिसने बनाई,तर गए अवतार से।
गोद दो-दो भर दिए थे,एक ही उपहार से।।

जब तलक जिंदा प्रकट हो,माँ हमारे पास में।
मर गई तो गौर करता,चल रही हर साँस में।।
सिंधु भी गहरा नहीं है,माँ तुम्हारे सामने।
मैं कहीं भी लड़खड़ाया,तू चली तब थामने।।

तुम खिलाने भोज्य रुचिकर,ला रही हो प्रेम से।
जो बचा था अन्न रूखा,खा रही हो प्रेम से।।
पुत्र माँ का त्याग करते,संकटों से भागते।
पर तुम्हारा त्याग लखकर,देव आँसू ढारते।।

प्राण भी देकर कहाँ से,ऋण बराबर कर सकूँ।
मैं अभागा क्या करूँ माँ,फल कहाँ मीठा चखूँ।।
गूँजता आँगन रहे जब,शब्द बेटा बोल से।
है नहीं वह स्वर्ग सुंदर,शब्द माँ अनमोल से।।

भाग्यशाली वे जगत में,बोल सुनते रे!अरे।
नाम से भार्या बुलाती,माँ मगर सोना खरे।।
जब तलक तुम साँस भरती,मन नहीं मंदिर लगा।
संत स्वागत मिल गया शुभ,मन नहीं चंचल जगा।।

रामपाल प्रसाद सिंह ‘अनजान’
सेवानिवृत शिक्षक
मध्य विद्यालय दरवेभदौर

माँ

ममता की निर्मल सरिता,
वसुंधरा सी असह्य पीड़ा,
सह कहलाती जननी ।
स्वयं भूखी परवाह नहीं,
बच्चों के क्षुधा मिटाने को
करती रहती दिन -रात जतन।
कहीं ठोकर खाकर गिरे नहीं,
अंगुली थामें रहती है ।
सूरज के तप्त किरण हो,
या पावस के शीतल बूंद,
आंचल के छांव में छुपा लेती ।
वह अनमोल शब्द है मां,
कभी डांटती फटकारती,
सच्चा मार्ग दिखाती,
प्रथम गुरु कहलाती मां।
नन्हे कदम लड़खड़ाते देख,
दौड़ कर आ जाती मां।
संकट या मुश्किल घड़ी में,
ढाल बन जाती मां।
संतान के आंखों में अश्रु देख,
कोमल नयन से अश्रु बहा लेती।
ममता की निर्मल सरिता,
मां अंबर तू वसुंधरा है।

ब्यूटी कुमारी
प्रधान शिक्षक
दलसिंहसराय,
समस्तीपुर

माँ की ममता

जग में लानेवाली माँ की, ममता का है मोल नहीं।
कैसे चर्चा मैं कर पाऊँ, निकल रही है बोल नहीं।।

जिसने जगत नियंता को भी, आँचल में रख पाला है।
जिसके चरणों में देवों ने, अपने सिर को डाला है।।
जिसकी ममता के सम्मुख है, सुरपुर का भी तोल नहीं।
जग में लानेवाली माँ की, ममता का है मोल नहीं।।

सारे रिश्तों की जो जननी, साँसें भी दी जिसने है।
ज्ञान चक्षु भी सबसे पहले, खोली सबकी जिसने है।।
पुत्र भूल कर सकता लेकिन, माँ करती है झोल नहीं।
जग में लानेवाली माँ की, ममता का है मोल नहीं।।

संतानों के सुख के खातिर, सारी विपदा सहती है।
ईश्वर से भी संतानों की, खुशियाँ माँगा करती है।।
अहसासों को पढ़कर जाना, कल्पित और कपोल नहीं।
जग में लानेवाली माँ की, ममता का है मोल नहीं।।

राम किशोर पाठक
सियारामपुर, पालीगंज, पटना,
बिहार।

मां

मैंने उसे कभी चैन से सोते नहीं देखा।
मजबूरी का रोना कभी रोते नहीं देखा।।
हर वक्त थामे रहती थी वह पतवार साहस की ।
मुश्किलों में धैर्य कभी खोते नहीं देखा।।
वह अकेली अबला ही सौ मर्दों पे भारी थी।
अकेले लड़ी जमाने से,क्योंकि मां थी वह नारी थी।।
उसने अपना फर्ज निभाया,भूखे रात गुजारी थी।
वक्त का पहिया घूम रहा था,अब बच्चों की बारी थी।।
बच्चे बड़े हुए,शादियां हुई,सब का घर बस गया।
जवानी गुजारी तन पे बुढ़ापे का शिकंजा कस गया।।
घर भरा था बाल बच्चों से,घर का आँगन सुरभित था।
पर बच्चों की बोली सुनने को,उसका अंतर्मन तरस गया।।
बुढ़ापे में बच्चे साथ छोड़ जाते हैं।
इस परम सत्य को वो भूल जाते हैं।।
एक दिन काल चक्र उनपर भी मंडराएगा।
जब बुढ़ापे का शिकंजा अपना परचम लहराएगा।।
माता-पिता के दम पर ही तो आज हमारी पहचान है।
उनके कर्ज को उतार पाना कहो कहां आसान है।।
आज मैं जो भी,जैसी भी हूं मेरी मां का अरमान है।
मां के दम से है मेरी हस्ती मां से ही पहचान है।।

बिंदु अग्रवाल

माँ

अधूरी हसरतों के संग अधूरी सी लगती जिंदगी,
खुशियों की बातें लगती सब बिल्कुल ही बेमानी,
तेरा साथ मेरे टूटते भरोसे को जोड़ता सदा ही,
मेरी दुनिया तुझमें कही फिर मैंने ये है जानी।
तुझसे ही जिद तुझसे ही मेरे सारी चलती लड़ाई,
खुशियों के पल में तेरा साथ सबसे बड़ा मिठाई,
तुमसे ही मिलती हर पल में हिम्मत मुझको सदा,
मेरी दुनिया तुझमें कहीं तू मेरे पूर्व जन्मों की कमाई।
तू ही मेरे जीवन का सबसे बड़ी राजदार और सहेली,
तू सुलझाती मेरे जीवन की सारी कठिन पहेली,
तुमसे ही जाना कैसे मुश्किलों का सामना करना है,
मेरी दुनिया तुझमें कहीं तू मेरी सबसे बड़ी हमजोली।

रूचिका
प्राथमिक विद्यालय कुरमौली गुठनी
सिवान बिहार

मेरी मां

माँ शब्द एक और अर्थ है अनेक,
यह कैसे कर दिखलाती हो।
इस एक शब्द के बोझ तले,
कहीं खोकर तो न रह जाती हो।
है व्यंजन की तो बात कहाँ,
तुम नीर भी मधु बनाती हो।
वायु सा वेग, सूरज सी ऊर्जा,
नित रोज कहाँ से लाती हो।
मेरी नादानियों और शैतानियों पर,
जब जोर से डाँट लगाती हो।
फिर बड़ी – बड़ी इन आँखों में,
अँश्रु क्यों ले आती हो।
इतनी स्नेही बन जाती हो,
संतान को अपने हृदय में बसाती हो।
माँ इस एक शब्द के बोझ तले,
कहीं खोकर तो न रह जाती हो।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड – केवटी, दरभंगा
बिहार।

मां

माँ हमारे जीवन का,
मजबूत आधार है,
ममता की मूरत है, इसे समझाइए।
संसार की जननी है,
सफलता की राहों में,
प्रेरणा का एक श्रोत, सबको बताइए।
ईश्वर का रूप है माँ,
उनकी पूजा-पाठ से,
अपना जीवन आप, सफल बनाइए।
माँ हमारी ढाल भी है,
और हमारी आन भी,
कभी भी आप उनका,दिल मत दुखाइए।

भवानंद सिंह
मध्य विद्यालय मधुलता
रानीगंज, अररिया

मां की याद सताती है

गर्भकाल से हीं जो हमपर ममता प्रेम लुटाती है,
स्वस्थ काया को मेरे खातिर ,रोगग्रस्त कर जाती है ।
मेरे सुरक्षा के कारण वो, हरपल देव मनाती हैं।
इसलिए हर सुख – दुख में बस
मां की याद सताती है।
जिह्वा- स्वाद को भूल के वह,
उबला खाकर रह जाती है।
स्वयं जागके गीले कपड़ों में,
सूखे में हमें सुलाती है।
कोमल भावों से सेती वो
हर पल बस स्नेह लुटाती है।
इसलिए तो हर सुख – दुख में मां की याद सताती है।
अपनी बांहों में भरकर जब ,लोरी रातों में गाती है।
परीलोक की कथा सुनाकर, जन्नत की सैर कराती है।
मैं रूठूं जब भी बार – बार,
वो प्यार से हमें मनाती हैं।
इसलिए हर दुख – सुख में बस मां की याद सताती है।
पढ़ना- लिखना आगे बढ़ना, संस्कृति- संस्कार सिखाती है।
जब बात मेरी रक्षा की हो तब,
सिंहों से लड़ जाती है।
सत्य, त्याग, संयम, धीरज संग,
हमें नैतिक पाठ पढ़ाती है ।
इसलिए हर दुख – सुख में बस मां की याद सताती है।

सदाचार शुभकर्म कराती ,
स्वावलंबी हमें बनाती है।
मेहनत,लगन, संघर्ष की गाथा
अनुभव से कह जाती है।
क्रोध दमन का मौन अस्त्र है
यही जीवन का मर्म बताती है।
इसलिए तो हर सुख-दुख में मां की याद सताती है।
संतान की साड़ी पीड़ा को,
मां तत्क्षण हीं हर लेती है।
जब मन पर पाप का बोझ भी हो,
सिर को फिर सहला देती हैं।
संतानों की हर भूल – चूक पर
दया करूणा दिखलाती है।
इसलिए तो हर सुख-दुख में मां की याद सताती है।
आए लाख मुसीबत हमपर तो,
वो स्वयं ढाल बन जाती है।
मौत की छाया भी टल जाए,
जब गोदी में हमें सुलाती है।
जीवन की धूप में जलूं अगर,
छाया ममता की लाती है।
इसलिए तो हर सुख-दुख में मां की याद सताती है।

मनु कुमारी
प्राथमिक विद्यालय दीपनगर
बिचारी,राघोपुर

मां की ममता

मां – मेरा पहला संसार।
सदा देती खुशियां अपार।
मां का प्रेम अपनी सन्तान के लिए ,
होता है गहरा और अटूट।
अपनी सन्तान के लिए सदा,
मेहनत करती भरपूर।
मां की महिमा है धन्य धरा पर,
मां से ही है सृष्टि का सृजन।
त्याग, समर्पण ही है इसका भूषण ।
बच्चों पर लुटाती है जान हरदम ।
कभी डांटती,कभी पुचकारती।
कभी करती है आलिंगन।
हर बच्चों की पहली पुकार होती है मां।
ममता की देवी होती है मां।
बच्चों के राहों पर फूल बिछाती है मां।
खुद कांटों पर सो जाती है मां।
पुत्र हो सकता है कुपूत,
पर मां न होती कभी कुमाता है।
मां की सेवा जो करता है,
वो सदा सुखी रहता है।।

हर्ष नारायण दास
फारबिसगंज
जिला – अररिया।
बिहार।

मां

सुबह की पहली किरण है माँ,
ममता का सागर है माँ,
त्याग की मूर्ति है माँ,
दिल की धड़कन है माँ,
एक अनमोल उपहार है माँ।
धूप की छांव है माँ,
हर दर्द की दवा है माँ ,
हर आँसू में मुस्कान सजाती है माँ,
अपनी दर्द छुपाकर प्यार लुटाती है माँ,
एक अनमोल रत्न है माँ।
जो कभी न थकती वो है माँ,
खुद भूखी रहकर बच्चों को खिलाती वो है माँ,
बच्चों पर अपनी जान गवाती वो है माँ,
हर कदम पर साथ देती वो है माँ,
दुनियाँ में एक अनमोल है माँ।
मंजिल की राह दिखाती है माँ ,
हर कठिन डगर पार कराती है माँ,
हर अंधेरी राह में प्रकाश दिखाती है माँ,
गंगा- सी निर्मल धारा बहाती है माँ,
प्यारा सा अनमोल शब्द है माँ।

मुन्नी कुमारी
प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर
मुशहरी
प्रखण्ड- झंझारपुर, मधुबनी

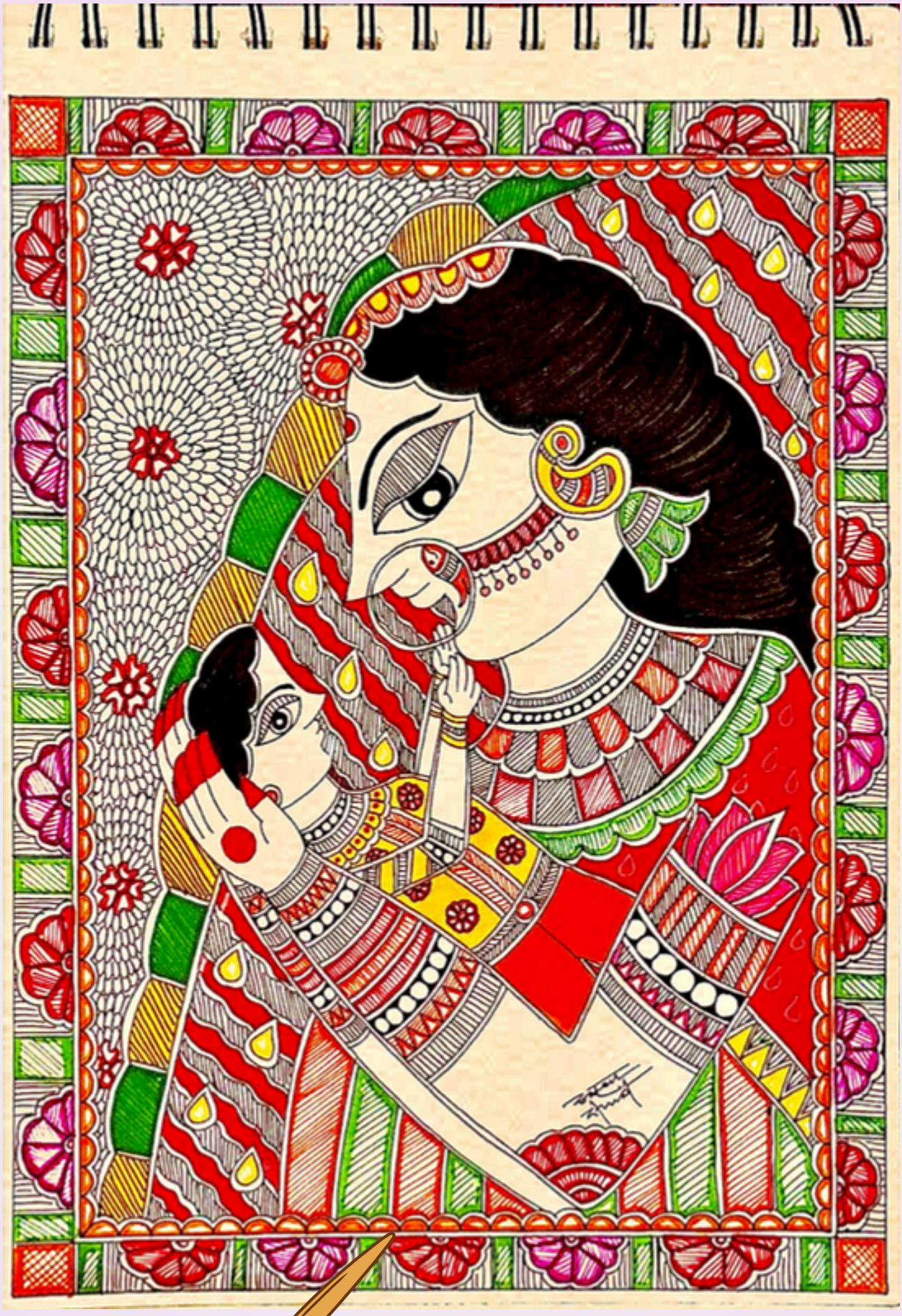

आस्था दीपाली
राजकीयकृत उच्च माध्यमिक (+२) विद्यालय कुढ़नी, मुज़फ़्फ़रपुर

पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें